विश्व संस्कृति में बिहार का योगदान

-अरुण कुमार उपाध्याय, भुवनेश्वर।

सारांश-वर्तमान बिहार प्रान्त (झारखण्ड सहित) में कई प्राचीन जनपदों या प्राकृतिक क्षेत्र सम्मिलित हैं-काशी का पूर्व भाग, मिथिला, मल्ल-वैशाली गण, पौण्ड्रक (पुण्ड्र), मगध, मुद्गार्क (मुद्गगिरि), अङ्ग, अन्तर्गिरि, बहिर्गिरि, करूष, मालवा, कर्कखण्ड। प्राचीनतम विवरण के अनुसार छोटानागपुर प्राचीनतम भूखण्डों में से है तथा यह विश्व में खनिज का मुख्य केन्द्र था। असुर राजा बलि के समय देव-असुर द्वारा संयुक्त समुद्र मन्थन हुआ था, जो खनिज निष्कासन था। मुख्य खनिज केन्द्र छोटा नागपुर था जहां खनन के लिए अफ्रीका से लोग आये थे। सञ्चालक थे पुष्कर द्वीप (दक्षिण अमेरिका) के वासुकि नाग। अतः यह इन्द्र (अच्युत-च्युत) का नागपुर या च्युत-नागपुर कहते थे जो छोटानागपुर हो गया। इसके बाद प्रथम चक्रवर्त्ती राजा पृथु के समय मगध का उल्लेख आता है, जिनके समय पृथ्वी का दोहन हुआ था। जल प्रलय के बाद भारत में सूर्यवंश का प्रभुत्व था। इक्ष्वाकु के पुत्र निमि मिथिला के राजा थे, जिनकी दक्षिणी सीमा उस समय कर्क रेखा पर थी। रामायण काल में मिथिला, अंग (शृङ्गी ऋषि), मगध (सुमित्रा का स्थान) आदि के मुख्य उल्लेख हैं। महाभारत काल में काशी, मगध (जरासन्ध), अंग (कर्ण), मिथिला, पौण्ड्र आदि मुख्य राज्य थे। महाभारत के बाद २७०० वर्षों तक मगध ही भारत का शासन केन्द्र रहा। इसके साथ यह आर्थिक और सैन्य शक्ति का भी केन्द्र था। पुराणों में कलि के राजवंशों में केवल मगध राजाओं का ही वर्णन है। नालन्दा, विक्रमशिला, कुसुमपुर आदि विश्वविद्यालय उसी काल के हैं, जिनको परवर्त्ती काल का कहा जाता है। गुप्त वंश के बाद सत्ता का केन्द्र मालवा के परमार राजा विक्रमादित्य हो गये। उनके सहित ४ अग्निवंशी राजाओं का प्रभुत्व १२०० ई तक रहा। बीच में बिहार हर्षवर्धन तथा पाल राजाओं के अधीन रहा। १५०० ई में शेरशाह सूरी बिहार का शक्तिशाली राजा था। अंग्रेजी शासन के आरम्भ में उन्होंने बिहार-बंगाल के दीवानी अधिकार मुगल राजाओं से लिए, जिनके लगान वसूली के कारण ये निर्धन हो गये। कलकत्ता राजधानी होने के कारण शासन सहायक रूप में बंगाल की शिक्षा तथा नौकरी में उन्नति हुई, परबिहार उससे भी वञ्चित रहा। उस काल में उत्तर बिहार में छोटी लाइन की रेल लाइन बनने से उसका सम्पर्क तथा आर्थिक विकास बन्द हो गया। स्वाधीनता के बाद जाति संघर्ष में फंसने से बिहार पिछड़ता चला गया।

----

१. प्राचीन भूगोल-पुराणों में द्वीपों के २ प्रकार के वर्णन हैं-पृथ्वी के ७ स्थल भाग तथा ७ जल समुद्र। सौर मण्डल में पृथ्वी से दीखती ग्रह कक्षाओं से जो वलयाकार क्षेत्र बनते हैं उनको भी द्वीप कहा गया है जिनके नाम पृथ्वी के द्वीपों जैसे ही हैं। उनके बीच का क्षेत्र पृथ्वी के ७ समुद्रों के नाम पर हैं। नेपचून ग्रह कक्षा तक का भाग १०० करोड़ योजन की चक्राकार पृथ्वी है। इसका भीतरी आधा भाग ५० करोड़ योजन व्यास का भाग लोक (प्रकाशित भाग) है, तथा बाहरी भाग अलोक है। पृथ्वी के द्वीप हैं-जम्बू द्वीप (एशिया), प्लक्ष द्वीप (यूरोप), कुश द्वीप (विषुव के उत्तर का अफ्रीका), शाल्मलि द्वीप (विषुव से दक्षिण का अफ्रीका), शक द्वीप (अङ्ग या अग्नि द्वीप)-आस्ट्रेलिया, क्रौञ्च द्वीप (उत्तर अमेरिका), पुष्कर द्वीप (दक्षिण अमेरिका)। गोल पृथ्वी का समतल नक्शा बनाने पर ध्रुव क्षेत्र का अनन्त आकार हो जाता है। उत्तरी ध्रुव जल भाग में है (आर्यभटीय, ४/१२), अतः वहां कोई समस्या नहीं है। पर दक्षिणी ध्रुव स्थल भाग में होने के कारण उसका आकार अनन्त हो जायेगा। अतः उसे अनन्त द्वीप कहते थे और उसके २ भूखण्ड (यमल) होने से यम द्वीप भी नाम था।

२. भारत के ३ अर्थ-(१) भू पद्म का दल-उत्तर गोल का नक्शा ४ समान खण्डों में बनता था, जिनको भूपद्म का ४ दल कहते थे (विष्णु पुराण, २/२/२४,४०)। यहां भारत-दल का अर्थ है विषुवत रेखा से उत्तरी ध्रुव तक, उज्जैन (७५०४३' पूर्व) के दोनों तरफ ४५-४५ अंश पूर्व-पश्चिम। इसके पश्चिम में इसी प्रकार केतुमाल, पूर्व में भद्राश्व तथा विपरीत दिशा में (उत्तर) कुरु, ९०-९० अंश देशान्तर में हैं। इस भारत दल को इन्द्र का ३ लोक कहते थे। मध्य में चीन था जिसे वे लोग आज भी मध्य राज्य कहते हैं।

(२) भारत वर्ष-हिमालय को पूर्व-पश्चिम समुद्र तक फैलाने पर उसके दक्षिण समुद्र तक भाग को ९ खण्ड का भारतवर्ष कहते हैं।
कुमारिका खण्ड के दक्षिण ध्रुव तक का समुद्र भी कुमारिका खण्ड ही है जिस प्रकार आज भारत महासागर कहते हैं।
मत्स्य पुराण, अध्याय ११४-
भारतस्यास्य वर्षस्य नव भेदान् निबोधत॥७॥
इन्द्रद्वीपः कशेरुश्च ताम्रपर्णो गभस्तिमान्। नागद्वीपस्तथा सौम्यो गन्धर्वस्त्वथ वारुणः॥८॥
अयं तु नवमस्तेषां द्वीपः सागर संवृतः। योजनानां सहस्रं तु द्वीपोऽयं दक्षिणोत्तरः॥९॥
आयतस्तु कुमारीतो गङ्गायाः प्रवहावधिः। तिर्यगूर्ध्वं तु विस्तीर्णः सहस्राणि दशैव तु॥१०॥
इन्द्रद्वीप = दक्षिण पूर्व एशिया, जहां आज भी इन्द्र सम्बन्धित ५० वैदिक शब्द प्रचलित हैं। गरुड़ के नाम पर कम्बोडिया का वैनतेय जिला भी है। कशेरु = बोर्नियो, सेलेबीज, फिलीपीन। ताम्रपर्ण= तमिलनाडु के निकटवर्त्ती सिंहल (श्रीलंका)। गभस्तिमान = पूर्वी इण्डोनेसिया। पपुआ न्यूगिनी आस्ट्रेलिया का भी भाग था, जहां की गभस्ति नदी को शक द्वीप में कहा गया है। नागद्वीप = अण्डमान निकोबार से पश्चिमी इण्डोनेसिया तक। नाग का अर्थ हाथी भी है। हाथी की सूंड के आकार में होने के कारण इण्डोनेसिया के पश्चिम-पूर्व भागों को बड़ा तथा छोटा शुण्डा कहते हैं। सौम्य = उतर में तिब्बत। गन्धर्व -अफगानिस्तान, ईरान। वारुण = अरब, ईराक।
यह (अखण्ड भारत) कुमारिका या भारत खण्ड है जो दक्षिण समुद्र से गंगा उद्गम तक चौड़ा होता गया है।
(३) कुमारिका खण्ड-प्रायः वर्तमान भारत है। दक्षिण से देखने पर यह अधोमुख त्रिकोण है अतः तन्त्र के अनुसार शक्ति त्रिकोण है। शक्ति का मूल रूप कुमारी है, अतः भारत के ९ खण्डों में मुख्य होने से इसे कुमारिका कहते हैं। ऋषभ के पुत्र भरत के नाम पर इसे भारत कहा गया। प्रजा का या विश्व का भरण (अन्न द्वारा) करने के कारण भी इसे भारत कहते हैं।

३. भारत के नाम-

(१) भारत- इन्द्र के ३ लोकों में भारत का प्रमुख अग्रि (अग्रणी) होने के कारण अग्नि कहा जाता था। इसी को लोकभाषा में अग्रसेन कहते हैं। प्रायः १० युग (३६०० वर्षों) तक इन्द्र का काल था जिसमें १४ प्रमुख इन्द्रों ने प्रायः १००-१०० वर्ष शासन किया। इसी प्रकार अग्रि = अग्नि भी कई थे। अन्न उत्पादन द्वारा भारत का अग्नि पूरे विश्व का भरण करता था, अतः इसे भरत कहते थे। देवयुग के बाद ३ भरत और थे-ऋषभ पुत्र भरत (प्रायः ९५०० ई.पू.), दुष्यन्त पुत्र भरत (७५०० ई.पू.), राम के भाई भरत जिन्होंने १४ वर्ष (४४०८-४३९४ ई.पू.) शासन सम्भाला था।
अग्नेर्महाँ ब्राह्मण भारतेति । एष हि देवेभ्य हव्यं भरति । (तैत्तिरीय संहिता, २/५/९/१, तैत्तिरीय ब्राह्मण, ३/५/३/१, शतपथ ब्राह्मण, १/४/१/१)
= ब्रह्मा ने अग्नि को महान् तथा भारत कहा था क्योंकि यह देवों को भोजन देता है।
विश्व भरण पोषण कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई॥
(रामचरितमानस, १/१९६/७)
भारत के बारे में यही विचार सभी ग्रीक लेखकों के भी हैं, पर उन लोगों को इसका आकार का पता नहीं था (जैसे मेगास्थनीज, इण्डिका, ३६)। यूरोप के लोग इसे १७५० ई तक चौकोर लिखते थे।

(२) अजनाभ-विश्व सभ्यता के केन्द्र रूप में इसे अजनाभ वर्ष कहते थे। इसके शासक को जम्बूद्वीप के राजा अग्नीध्र (स्वयम्भू मनु पुत्र प्रियव्रत की सन्तान) का पुत्र नाभि कहा गया है। (विष्णु पुराण, २/१/१५-३२)

(३) हिमवत वर्ष- भौगोलिक खण्ड के रूप में इसे हिमवत वर्ष कहा गया है क्योंकि यह जम्बू द्वीप में हिमालय से दक्षिण समुद्र तक का भाग है। अलबरूनी ने इसे हिमयार देश कहा है (प्राचीन देशों के कैलेण्डर में उज्जैन के विक्रमादित्य को हिमयार का राजा कहा है, जिसने मक्का मन्दिर की मरम्मत कराई थी)। वर्ष शब्द के ३ अर्थ हैं।

मेघ से जल की बून्दें गिरती हैं, वह वर्षा है। वर्षा से आगामी वर्षा तक का समय भी वर्ष है। पर्वत के कारण एक वर्षा क्षेत्र (मॉनसून) को वर्ष कहते हैं तथा उस सीमावर्त्ती पर्वत को वर्ष पर्वत कहते हैं। इस प्रकार पूर्ण रूप से परिभाषित वर्ष भारत ही है।

(४) इन्दु-आकाश में सृष्टि विन्दु से हुयी, उसका पुरुष-प्रकृति रूप में २ विसर्ग हुआ-जिसका चिह्न २ विन्दु हैं। विसर्ग का व्यक्त रूप २ विन्दुओं के मिलन से बना 'ह' है। इसी प्रकार भारत की आत्मा उत्तरी खण्ड हिमालय में है जिसका केन्द्र कैलास विन्दु है। यह ३ विटप (वृक्ष, जल ग्रहण क्षेत्र) का केन्द्र है-विष्णु विटप से सिन्धु, शिव विटप (शिव जटा से गंगा) तथा ब्रह्म विटप से ब्रह्मपुत्र। इनको मिलाकर त्रिविष्टप = तिब्बत स्वर्ग का नाम है। इनका विसर्ग २ समुद्रों में होता है-सिन्धु का सिन्धु समुद्र (अरब सागर) तथा गंगा-ब्रह्मपुत्र का गंगा-सागर (बंगाल की खाड़ी) में होता है। गङ्गा स्रोत इन्दु सरोवर है जहां से दक्षिण समुद्र तक इन्दु-मण्डल या भारत है।

विष्णुपाद विनिष्क्रान्ता प्लावयित्वेन्दु मण्डलम्।
समन्ताद् ब्रह्मणः पुर्यां गङ्गा पतति वै दिवः॥ (विष्णु पुराण, २/२/३२)
सप्त चैताः प्लावयन्ति वर्षं तु हिमसाह्वयम्।
प्रसूताः सप्त नद्यस्तु शुभा बिन्दुसरोद्भवाः॥(मत्स्य पुराण, १२१/४२)

हुएनसांग ने लिखा है कि ३ कारणों से भारत को इन्दु कहते हैं-(क) उत्तर से देखने पर अर्द्ध-चन्द्राकार हिमालय भारत की सीमा है, चन्द्र या उसका कटा भाग = इन्दु। (ख) हिमालय चन्द्र जैसा ठण्ढा है। (ग) जैसे चन्द्र पूरे विश्व को प्रकाशित करता है, उसी प्रकार भारत पूरे विश्व को ज्ञान का प्रकाश देता है। ग्रीक लोग इन्दु का उच्चारण इण्डे करते थे जिससे इण्डिया शब्द बना है। (ह्वेनसांग की भारत यात्रा, अध्याय २ के आरम्भ में)

(५) हिन्दुस्थान-ज्ञान केन्द्र के रूप में इन्दु और हिन्दु दोनों शब्द हैं-हीनं दूषयति = हिन्दु। १८ ई. में उज्जैन के विक्रमादित्य के मरने के बाद उनका राज्य १८ खण्डों में बंट गया और चीन, तातार, तुर्क, खुरज (कुर्द) बाह्लीक (बल्ख) और रोमन आदि शक जातियां। उनको ७८ ई. में विक्रमादित्य के पौत्र शालिवाहन ने पराजित कर सिन्धु नदी को भारत की पश्चिमी सीमा निर्धारित की। उसके बाद सिन्धुस्थान या हिन्दुस्थान नाम अधिक प्रचलित हुआ। देवयुग में भी सिधु से पूर्व वियतनाम तक इन्द्र का भाग था, उनके सहयोगी थे-अफगानिस्तान-किर्गिज के मरुत्, इरान मे मित्र और अरब के वरुण तथा यमन के यम।

(६) गोरूपी हिङ्कृण्वती -अथर्ववेद सूक्त (१२/१) के ६३ मन्त्र मातृभूमि सूक्त के हैं। इसमें भारत को पूरे विश्व का पालन, भरण करने वाली गौ कहा गया है। अथर्व सूक्त (९/१०) में भी गौ के विविध रूपों का वर्णन है। विश्व का भरण करने के कारण यह भारत है। पुराणों में भी परशुराम तथा विश्वामित्र प्रसंग में भारत को कामधेनु रूप कहा गया है जिसकी जातियों ने जमदग्नि तथा वसिष्ठ की सहायता की थी। (ब्रह्मवैवर्त पुराण, ३/२४/५९-६४, ब्रह्माण्ड पुराण, २/३/२९/१८-२१, स्कन्द पुराण, ६/६६/५२-५३, वाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड, ५४/१८-२३, ५५/२-३)। क्रिया रूपी गौ को हिंकृण्वती कहा है, तथा इसे वसु-पत्नी अर्थात् धन देने वाली या स्वामी की पत्नी कहा है। अतः कन्नड़ में मुखिया को हेगडे और उसकी पत्नी को हेग्गड़ती (हिंकृण्वती) कहते हैं। हेगडे का भाव हेकड़ी हिन्दी में प्रचलित है।

हिङ्कृण्वती वसुपत्नी वसूनां वत्समिच्छन्ति मनसाभ्यागात्।
दुहां अश्विभ्यां पयो अघ्न्येयं सा वर्धतां महते सौभगाय॥
(अथर्व, ९/१०/५, ऋक्, १/१६४/२७)

अथर्व (७/७७/८, १२/७/१०) तथा वाज यजु (२२/७) में भी है।

हिं (कृण्वती) को दु(ह) कर सौभाग्य वृद्धि करने तथा उसे शाश्वत (अघ्न्या = जिसे नहीं मारा जाय) रखने वाले हिन्दु (हिं + दु) हैं।

(७) कुमारिका-अरब से वियतनाम तक के भारत के ९ प्राकृतिक खण्ड थे, जिनमें केन्द्रीय खण्ड को कुमारिका कहते थे। दक्षिण समुद्र की तरफ से देखने पर यह अधोमुख त्रिकोण है जिसे शक्ति त्रिकोण कहते हैं। शक्ति (स्त्री) का मूल रूप कुमारी होने के कारण इसे कुमारिका खण्ड कहते हैं। इसके दक्षिण का महासागर भी कुमारिका खण्ड ही है जिसका उल्लेख तमिल महाकाव्य शिलप्पाधिकारम् में है। आज भी इसे हिन्द महासागर ही कहते हैं।

४. बिहार नाम का मूल-

सामान्यतः कहा जाता है कि यहां बौद्ध विहार अधिक थे अतः इसका नाम बिहार पड़ा। यह स्पष्ट रूप से गलत है और केवल बौद्ध भक्ति में लिखा गया है। जब सिद्धार्थ बुद्ध (१८८७-१९०७ ई.पू.) या गौतम बुद्ध (५६३ ई.पू जन्म) जीवित थे तब भी इसे बिहार नहीं, मगध कहते थे। बौद्ध विहार केवल बिहार में ही नहीं, भारत के सभी भागों में थे। मुख्यतः कश्मीर में अशोक के समकालीन गोनन्द वंशी अशोक के समय सबसे अधिक बौद्ध विहार बने थे जिसमें मध्य एसिया के बौद्धों का प्रवेश होने से उन्होंने कश्मीर का राज्य नष्ट-भ्रष्ट कर दिया (राजतरंगिणी, तरंग १)। यह भारत के प्राकृतिक विभाजन के कारण नाम है। आज भी हिमाचल प्रदेश में पहाड़ की ऊपरी भूमि (अधित्यका) को खनेर और घाटी की समतल भूमि (उपत्यका) को बहाल या बिहाल कहते हैं। इसका मूल शब्द है बहल (बह् + क्लच्, न लोपश्च) = प्रचुर, बली, महान्। यथा-असावस्याः स्पर्शो वपुषि बहलश्चन्दन रसः (उत्तर रामचरित, १/३८), प्रहारै रुद्रच्छ्द्दहन बहलोद्गार गुरुभिः (भर्तृहरि, शृङ्गार शतक, ३६)। बहल एक प्रकार की ईख का भी नाम है। खनेर का मूल शब्द है- खण्डल-भूखण्ड, या उसका पालन कर्त्ता। आखण्डल -सभी भूखण्डों का स्वामी इन्द्र। भारत में विन्ध्य और हिमालय के बीच खेती का मुख्य क्षेत्र था। उसमें भी बिहार भाग सबसे चौड़ा और अधिक नदियों (विशेषकर उत्तर बिहार) से सिञ्चित था। अधिक विस्तृत समतल भाग के अर्थ में इसे बहल या विहार (रमणीय) कहते हैं।

सबसे अधिक कृषि का क्षेत्र मिथिला था जहां के राजा जनक भी हल चलाते थे। खेती में मुख्यतः घास जाति के धान और गेहूं रोपे जाते हैं, जो एक प्रकार के दर्भ हैं। दर्भ क्षेत्र को दरभंगा कहते हैं। भूमि से उत्पन्न सम्पत्ति सीता है, इसका एक भाग राजा रूप में इन्द्र को मिलता है। अतः यह शक्ति क्षेत्र हुआ। दर्भंगा के विशेष शब्द वही होंगे जो अथर्ववेद के दर्भ तथा कृषि सूक्तों में हैं। यहां केवल खेती है, कोई वन नहीं है। इसके विपरीत विदर्भ में दर्भ बिल्कुल नहीं है, केवल वन हैं। इसका पश्चिमी भाग रीगा ऋग्वेद का केन्द्र था जहां से ज्ञान संस्थायें शुरु हुयीं। ज्ञान का केन्द्र काशी शिव का स्थान हुआ। कर्क रेखा पर गया विष्णुपद तीर्थ या विष्णु क्षेत्र हुआ। दरभंगा के चारों तरफ अरण्य क्षेत्र हैं-अरण्य (आरा-आयरन देवी), सारण (अरण्य सहित) चम्पारण, पूर्ण-अरण्य (पूर्णिया)। गंगा के दक्षिण छोटे आकार के वृक्ष हैं, अतः मगध को कीकट भी कहते थे। कीकट का अर्थ सामान्यतः बबूल करते हैं, पर यह किसी भी छोटे आकार के बृक्ष के लिये प्रयुक्त होता है जिसे आजकल कोकाठ कहते हैं। काशी (शिव), मिथिला (शक्ति), मगध (विष्णुपद) का संगम हरिहर-क्षेत्र है। हरि = विष्णु, हर = शिव + शक्ति।

उसके दक्षिण में पर्वतीय क्षेत्र को नागपुर (पर्वतीय नगर) कहते थे। इन्द्र का नागपुर होने से इसे चुतिया (अच्युत-च्युत) नागपुर कहते थे। यो अच्युत-च्युतः स-जनास इन्द्रः (ऋक्, २/१२/९)। = जो अभी तक अच्युत या अपराजित है, उसको इन्द्र च्युत कर सकते हैं। अतः असम में राजा को च्युत या चुतिया कहते थे। आज भी रांची में चुतिया मोड़ है। घने जंगल का क्षेत्र झारखण्ड है। इनके मूल संस्कृत शब्द हैं-झाटः (झट् + णिच + अच्)-घना जंगल, निकुञ्ज, कान्तार। झुण्टः = झाड़ी। झिण्टी = एक प्रकार की झाड़ी। झट संहतौ-केश का जूड़ा, झोंटा, गाली झांट।

गंगा नदी पर्वतीय क्षेत्र से निकलने पर कई धारायें मिल कर नदी बनती है। जहां से मुख्य धारा शुरु होती है उस गांगेय भाग के शासक गंगा पुत्र भीष्म थे। जहां से उसका डेल्टा भाग आरम्भ होता है अर्थात् धारा का विभाजन होता है वह राधा है। वहां का शासक राधा-नन्दन कर्ण था। यह क्षेत्र फरक्का से पहले है।

५. राजनीतिक भाग-

(१) मल्ल-गण्डक और राप्ती गंगा के बीच।
(२) विदेह-गंगा के उत्तर गण्डक और कोसी नदी के बीच, हिमालय के दक्षिण। राजधानी मिथिला वैशाली से ५६ किमी. उत्तर-पश्चिम।
(३) मगध-सोन नद के पूर्व, गंगा के दक्षिण, मुंगेर के पश्चिम, हजारीबाग से उत्तर। प्राचीन काल में सोन-गंगा संगम पर पटना था। आज भी राचीन सोन के पश्चिम पटना जिले का भाग भोजपुरी भाषी है। नदी की धारा बदल गयी पर भाषा क्षेत्र नहीं बदला। राजधानी राजगीर (राजगृह)।
(४) काशी-यह प्रयाग में गंगा यमुना संगम से गंगा सोन संगम तक था, दक्षिण में विन्ध्य से हिमालय तक। इसके पश्चिम कोसल (अयोध्या इसी आकार का महा जनपद था। इसका पूर्वी भाग अभी बिहार में है पुराना शाहाबाद अभी ४ भागों में है भोजपुर, बक्सर, रोहतास, भभुआ।
(५) अंग-मोकामा से पूर्व मन्दारगिरि से पश्चिम, गंगा के दक्षिण, राजमहल के उत्तर। राजधानी चम्पा (मुंगेर के निकट, भागलपुर) । मन्दार पर्वत समुद्र मन्थन अर्थात् झारखण्ड में देव और अफ्रीका के असुरों द्वारा सम्मिलित खनन का केन्द्र था। इसके अधीक्षक वासुकि नाग थे, जिनका स्थन वासुकिनाथ है। कर्ण यहां का राजा था।
(६) पुण्ड्र-मिथिला से पूर्व, वर्तमान सहर्षा और पूर्णिया (कोसी प्रमण्डल) तथा उत्तर बंगाल का सिलीगुड़ी। कोसी (कौशिकी) से दुआर (कूचबिहार) तक। राजधानी महास्थान बोग्रा से १० किमी. उत्तर।
पर्वतीय भाग-(१) मुद्गार्क-राजमहल का पूर्वोत्तर भाग, सन्थाल परगना का पूर्व भाग, भागलपुर और दक्षिण मुंगेर (मुख्यतः अंग के भाग)। मुद्गगिरि = मुंगेर।
(२) अन्तर्गिरि-राजमहल से हजारीबाग तक।
(३) बहिर्गिरि-हजारीबाग से दामोदर घाटी तक।
(४) करूष-विन्ध्य का पूर्वोत्तर भाग, कैमूर पर्वत का उत्तरी भाग, केन (कर्मनाशा) से पश्चिम।
(५) मालवा-मध्य और उत्तरी कर्मनाशा (केन नदी)।

६. सृष्टि निर्माण का क्रम-

ऋक् सूक्त (१/१२१) में यह क्रम दिया है-हिरण्यगर्भ (तेज पुञ्ज), क्रन्दसी (ब्रह्माण्ड या गैलेक्सी-ताराओं का संयुक्त क्रन्दन क्षेत्र), रोदसी (सूर्य का रुदन क्षेत्र, रुद्र भाग), द्यौ (आकाश), पृथिवी मही, हिमवान् (मुख्य पर्वत), समुद्र तक कई बाहु।

यं क्रन्दसी अवतश्चस्कभाने भियसाने रोदसी अह्वयेथाम्।
हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीमुत द्यां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥१॥
यं क्रन्दसी अवतश्चस्कभाने भियसाने रोदसी अह्वयेथाम्॥३॥
यस्य द्यौरुर्वी पृथिवी च मही यस्याद उर्वऽन्तरिक्षम्॥४॥
यस्य विश्वे हिमवन्तो महित्वा समुद्रे यस्य रसामिदाहुः।
इमाश्च प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम॥
(ऋक्, १०/१२१/१-६, अथर्व, ४/२/३-५, ७)

ज्ञान रूपी भा या प्रकाश में रत भारत देश था। उसका केन्द्र हिरण्यगर्भ क्षेत्र काशी हुआ (काश = दीप्ति, प्रकाश केन्द्र)। इस क्षेत्र की पूर्व सीमा शोण को हिरण्यबाहु कहते हैं। हिमवान् से समुद्र तक ऐसी अनेक बाहुओं से भरा भारत है। कोसल तथा विदेह (मिथिला) की सीमा बूढ़ी गण्डक को सदानीरा भी कहते थे। लिखा है कि सूर्य कर्क राशि में रहने से (आषाढ़ मास में) सभी नदियां जल से भरी रहती हैं, किन्तु सदानीरा में सदा जल रहता है।-

तर्हि विदेघो माथव आस। सरस्वत्यां स तत एव प्राङ्दहन्नभीयायेमां पृथिवीं तं गोतमश्च राहूगणो विदेहश्च माथवः पश्चाद्दहन्तमन्वीयतुः स इमाः सर्वा नदीरतिददाह सदानीरेत्युत्तराद्गिरेर्निर्घावति -- (शतपथ ब्राह्मण, १/४/१/१४)
अथादौ कर्कटे देवी त्र्यहं गङ्गा रजस्वला। सर्व्वा रक्तवहा नद्यः करतोयाम्बुवाहिनी॥ इति भरतः।
अतः सगर से पांच पीढ़ियों ने कैलास पर्वत से हरिद्वार तक हिमनदों को लाने का मार्ग बनाया। ये राजा थे-सगर, असमञ्जस + ६०००० सगर पुत्र, अंशुमान्, दिलीप, भगीरथ।
हिमनदों को लाने में ३ खण्ड थे-(१) तिब्बत में कैलास क्षेत्र से विन्दु सरोवर, (२) विन्दु सरोवर से हरिद्वार, (३) हरिद्वार से राजमहल तथा वहां से समुद्र तक।
राजमहल में ज्वालामुखी पर्वत था, खुदाई से पर्वत फट पड़ा जिससे सगर के ६०,००० पुत्र (या पुत्र तथा उनके साथ के इंजीनियर) जल कर मर गये। (भागवत पुराण, ९/८/७-३१, ९/९/१-१०)

७. समुद्र मन्थन-

समुद्र के कई अर्थ हैं। पृथ्वी की नीची भूमि पर जल के भण्डार ७ समुद्र हैं, जो ऊंचे ७ महाद्वीपों को घेरे हुए हैं। इसी प्रकार सौर मण्डल, ब्रह्माण्ड (गैलेक्सी) तथा पूर्ण विश्व के खाली स्थानों में फैले विरल पदार्थ घनत्व अनुसार ७ प्रकार के अप् (जल जैसा) समुद्र हैं। आकाश में ४ धाम हैं। हर धाम के समुद्र के मन्थन से पिण्डों का निर्माण हुआ। पृथ्वी भी उत्पादन स्रोत रूप में गौ है। उत्पादन के ४ स्रोत गौ के ४ स्तनों की तरह ४ समुद्र हैं। राजा पृथु द्वारा गो रूपी पृथ्वी का दोहन ४ स्रोतों से लिखा है-भूमि से कृषि द्वारा आहार, वृक्ष से फल-मूल-ओषधि, जल से पेय-सिञ्चन, पर्वतों से रत्न। आधुनिक भाषा में इनको ४ गोल (स्फियर) कहते हैं-जल समुद्र (hydrosphere), भूपृष्ठ (Lithosphere), वायुमण्डल (Atmosphere), जीव मण्डल (Biosphere)।
तत उत्सारयामास शिला-जालानि सर्वशः।
धनुष्कोट्या ततो वैन्यस्तेन शैला विवर्द्धिताः॥१६७॥
मन्वन्तरेष्वतीतेषु विषमासीद् वसुन्धरा। स्वभावेना-भवं-स्तस्याः समानि विषमाणि च॥१६८॥
आहारः फलमूलं तु प्रजानाम-भवत् किल। वैन्यात् प्रभृति लोके ऽस्मिन् सर्वस्यैतस्य सम्भवः॥१७२॥
शैलैश्च स्तूयते दुग्धा पुनर्देवी वसुन्धरा। तत्रौषधी मूर्त्तिमती रत्नानि विविधानि च॥१८६॥
(वायुपुराण, उत्तरार्ध, अध्याय १)
धेनुरिव वाऽइयं (पृथिवी) मनुष्येभ्यः सर्वान् कामान् दुहे माता धेनु-र्मातेव वा ऽइयं (पृथिवी) मनुष्यान् बिभर्त्ति। (शतपथ ब्राह्मण, २/२/१/२१)
पयोधरी भूत चतुः समुद्रां, जुगोप गोरूप धरामिवोर्वीम्। (रघुवंश, २/३)
राजा पृथु के समय पृथ्वी का व्यापक दोहन हुआ। उनका समय प्रायः १७,१०० ईपू अनुमानित है (कुंवरलाल जैन, पुराणों का कालक्रम)। उसके बाद राजा बलि ने देवों से सन्धि कर इन्द्र के राज्य वापस कर दिये। किन्तु युद्ध चलता रहा। समाधान के लिए कूर्म विष्णु ने सलाह दी कि सम्पत्ति के लिए विवाद है। किन्तु पहले सम्पत्ति का उत्पादन होना चाहिये। तब असुर और देव संयुक्त रूप से समुद्र मन्थन के लिए राजी हुए। बलि के समय ही कार्त्तिकेय का काल है, जिनके समय अभिजित् नक्षत्र का पतन हुआ तथा धनिष्ठा से वर्ष आरम्भ हुआ (महाभारत, वन पर्व, २३०/८-१०)। यह प्रायः १५८०० ईपू का काल है, जब धनिष्ठा से वर्षा तथा वर्ष का आरम्भ होता था। इस्अका आधार कूर्म कहा गया है। खनिज वाले कठोर चट्टानों को कूर्म पृष्ठ भूमि कहा जाता है। अतः कूर्म रूप विष्णु को समुद्र मन्थन का आधार कहा है। कोरबा से सिंहभूमि तक का खनिज क्षेत्र भी कूर्म आकार का है। इसके केन्द्र से मथानी आकार का पर्वत गंगा नदी तक गया है, जिसके छोर पर वासुकिनाथ है। वासुकि नाग को मन्थन के लिए रस्सी कहा गया है (पद्म पुराण, अध्याय ४/८-९, ६/५, ब्रह्म पुराण, २/३६, भागवत पुराण, ८/५-६ आदि)। वासुकि नाग मनुष्य

थे जिनका स्थान ब्रह्माण्ड पुराण, अध्याय १/२/२० में रसातल (दक्षिण अमेरिका) कहा गया है। रस्सी का अर्थ सम्बन्ध सूत्र है। वासुकि नाग की देव तथा असुर-दोनों से मित्रता थी। अतः वे समन्वय कर्ता बने। असुरों का कार्य स्थल गर्म भाग (वासुकि मुख) कहा है, अर्थात् वे खान के नीचे काम करते थे। असुर खनन में कुशल थे अतः वे असुर राज्य अफ्रीका से आये। प्रह्लाद का राज्य मिस्र, लिबिया में कहा गया है (तलातल लोक, तिल-अत-तल अमर्ना)। वहां से जो असुर छोटानागपुर के खनिज क्षेत्र में आये, उनका चेहरा आज भी अफ्रीका निवासियों से मिलता है। बाद में प्रायः ५०० वर्ष पूर्व अफ्रीका से आये पश्चिम तट के सिद्दियों का चेहरा भी अफ्रीका निवासियों से मिलता है।

आज भी अफ्रीका से आये झारखण्ड निवासियों के नाम खनिजों के अनुसार ही हैं। ये नाम ग्रीक भाषा में खनिजों के हैं। इसका कारण है कि प्रह्लाद या बलि के राज्य में पश्चिम एशिया के भाग भी थे, जहां के यवनों को राजा सगर ने निष्कासित किया था। यह डायोनिसस (बाक्कस) के ६७७७ ईपू आक्रमण के १५ वर्ष बाद प्रतिकार था। इस आक्रमण में सगर के पिता राजा बाहु मारे गये थे। हेरोडोटस के अनुसार यवन लोग पहले तुर्की के पश्चिम तट इजमीर गये, उसके बाद ग्रीस। उसके बाद ग्रीस का नाम इयोनिया (यूनान) हुआ। किन्तु आज भी यवनों के मूल स्थान अरब की चिकित्सा पद्धति को ही यूनानी कहते हैं। ग्रीक भाषा में खनिज नाम अनुसार उपाधियां हैं-

(१) मुण्डा-लौह खनिज को मुर (रोड के ऊपर बिछाने के लिये लाल रंग का मुर्रम) कहते हैं। नरकासुर को भी मुर कहा गया है क्योंकि उसके नगर का घेरा लोहे का था (भागवत पुराण, स्कन्ध ३)-वह देश आज मोरक्को है तथा वहां के निवासी मूर हैं। भारत में भी लौह क्षेत्र के केन्द्रीय भाग के नगर को मुरा कहते थे जो पाण्डु वंशी राजाओं का शासन केन्द्र था

(२) हंसदा-हंस-पद का अर्थ पारद का चूर्ण या सिन्दूर है। पारद के शोधन में लगे व्यक्ति या खनिज से मिट्टी आदि साफ करने वाले हंसदा हैं।

(३) खालको-ग्रीक में खालको का अर्थ ताम्बा है। आज भी ताम्बा का मुख्य अयस्क खालको (चालको) पाइराइट है।

(४) ओराम-ग्रीक में औरम का अर्थ सोना है।

(५) कर्कटा-ज्यामिति में चित्र बनाने के कम्पास को कर्कट कहते थे। इसका नक्शा (नक्षत्र देख कर बनता है) बनाने में प्रयोग है, अतः नकशा बना कर कहां खनिज मिल सकता है उसका निर्धारण करने वाले को करकटा कहते थे। पूरे झारखण्ड प्रदेश को ही कर्क-खण्ड कहते थे (महाभारत, ३/२५५/७)। कर्क रेखा इसकी उत्तरी सीमा पर है, पाकिस्तान के करांची का नाम भी इसी कारण है।

(६) किस्कू-कौटिल्य के अर्थशास्त्र में यह वजन की एक माप है। भरद्वाज के वैमानिक रहस्य में यह ताप की इकाई है। यह् उसी प्रकार है जैसे आधुनिक विज्ञान में ताप की इकाई मात्रा की इकाई से सम्बन्धित है (१ ग्राम जल ताप १० सेल्सिअस बढ़ाने के लिये आवश्यक ताप कैलोरी है)। लोहा बनाने के लिये धमन भट्टी को भी किस्कू कहते थे, तथा इसमें काम करने वाले भी किस्कू हुए।

(७) टोप्पो-टोपाज रत्न निकालने वाले।

(८) सिंकू-टिन को ग्रीक में स्टैनम तथा उसके भस्म को स्टैनिक कहते हैं।

(९) मिंज-मीन सदा जल में रहती है। अयस्क धोकर साफ करनेवाले को मीन (मिंज) कहते थे-दोनों का अर्थ मछली है।

(१०) कण्डूलना- पत्थर से सोना खोदकर निकालने वाले कण्डूलना हैं। उस से धातु निकालने वाले ओराम हैं। चींटी चढ़ने से कण्डूल (खुजली) होती है, अतः उसे कण्डूलना कहते है। इस नाम से हेरोडोटस को भ्रम हुआ कि भारत में चींटियां सोना निकालती हैं तथा उस पर दो अध्याय लिखे हैं। पत्थर या रेत के ढेर से सोना का कण निकालना वैसा ही है, जैसे चींटी बालू से चीनी आ कण खोज लेती है।

(११) हेम्ब्रम-संस्कृत में हेम का अर्थ है सोना, विशेषकर उससे बने गहने। हिम के विशेषण रूप में हेम या हैम का अर्थ बर्फ़ भी है। हेमसार तूतिया है। किसी भी सुनहरे रंग की चीज को हेम या हैम कहते हैं। सिन्दूर भी हैम है, इसकी मूल धातु को ग्रीक में हाईग्रेरिअम कहते हैं जो सम्भवतः हेम्ब्रम का मूल है।
(१२) एक्का या कच्छप-दोनों का अर्थ कछुआ है। वैसे तो पूरे खनिज क्षेत्र का ही आकार कछुए जैसा है, जिसके कारण समुद्र मन्थन का आधार कूर्म कहा गया। पर खान के भीतर गुफा को बचाने के लिये ऊपर आधार दिया जाता है, नहीं तो मिट्टी गिरने से वह बन्द हो जायेगा। खान गुफा की दीवाल तथा छत बनाने वाले एक्का या कच्छप हैं।

८. महाभारत पूर्व-

पृथु के राजा होने पर सबसे पहले मगध के लोगों ने उनकी स्तुति की थी (भागवत पुराण, अध्याय ४/१५ आदि), अतः खुशामदी लोगों को मागध कहते हैं। मागध (व्यक्ति की जीवनी-नाराशंसी लिखने वाले), बन्दी (राज्य के अनुगत) तथा सूत (इतिहास परम्परा चलाने वाले)-३ प्रकार के इतिहास लेखक हैं।

काशी के राजा दिवोदास के पुत्र सुदास के समय दाशराज युद्ध हुआ था जिसमें भरद्वाज दोनों तरफ के आचार्य थे। जेन्द अवेस्ता परम्पराके अनुसार जल प्रलय ९८४४ ई.पू. के २५९८ वर्ष बाद विस्ताश्प (ऋग्वेद, १/१२२/१३ का इष्टाश्व?, इक्ष्वाकु की ५ पीढ़ी बाद विष्टराश्व)। अतः प्रायः ७५०० ई.पू. या उससे पहले दिवोदास हुए।

मिथिला -इक्ष्वाकु (८५७५ ईपू) के १०वें पुत्र निमि से आरम्भ हुआ। वसिष्ठ और निमि ने एक दूसरे को विदेह (शरीर रहित होने का शाप दिया। उनके शरीर मन्थन से उत्पन्न पुत्र मिथि कहा गया। अतः इस क्षेत्र को मिथिला कहा गया और यहां के राजा विदेह और जनक कहे जाते थे। इसके मुख्य राजा थे-निमि, मिथि, सीरध्वज (सीता के पिता), केशिध्वज, धर्मध्वज (ब्रह्मवेत्ता), धर्मराज, जनदेव, मखदेव, ऐन्द्रद्युम्नि। करालजनक के साथ महाभारत के पूर्व इस राज्य का अन्त (सम्भवतः जरासन्ध द्वारा) हुआ। यहां निमि लाक्षणिक शब्द है। कार्त्तिकेय काल में दक्षिणायन (वर्षा) से जो सम्वत्सर आरम्भ हुआ वह यहां चलता रहा। पृथ्वी सतह पर सूर्य की गति की उत्तरी दक्षिणी सीमायें नेमि हैं, दक्षिण सीमा को अरिष्टनेमि (सबसे अधिक शीत के कारण) भी कहते हैं। उत्तरी नेमि जहां अन्त होती है वह क्षेत्र नैमिषारण्य कहा गया-यह अन्त विन्दु कई अक्षांशों पर होंगे क्योंकि पृथ्वी अक्ष का झुकाव घटता बढ़ता है। अतः उन स्थानों का क्षेत्र अरण्य हुआ। सूर्य संसार का चक्षु है, अतः उत्तरी दक्षिणी गोलार्ध की उसकी गतियां निमि (पलक) हैं। उत्तरी सीमा का अर्थ है कि उपरी पलक सदा खुला रहेगा, वहां से वर्ष आरम्भ होने के कारण कहा जाता है कि निमि का पलक नहीं गिरता था। आज भी वर्षा (श्रावण मास) से मिथिला का पञ्चाङ्ग आरम्भ होता है।

महाभारत काल में जरासन्ध मगध का प्रतापी राजा था जिसका प्रायः पूरे बिहार तथा बंगाल, असम भागों तक शासन था। उसकी राजधानी राजगृह आज भी वर्तमान है। इसके पूर्व सोन तट पर मणिनाग का स्थान था (मनेर) जहां जरासन्ध के पास जाते समय कृष्ण तथा भीम-अर्जुन रुके थे।

९. महाभारत बाद का इतिहास-

महाभारत में मगध का राजा जरासन्ध पुत्र सहदेव मारा गया। उसके बाद उसके पुत्र सोमापि से आरम्भ कर २२ राजाओं ने मगध पर शासन किया। उस समय से यह भारत का केन्द्रीय राज्य था। जरासन्ध के पिता बृहद्रथ के नाम पर इसे बार्हद्रथ वंश कहा जाता है। ब्रह्माण्ड (३/७४/१२१), विष्णु पुराण (४/२३/१२) आदि में इनकी सूची है। पूर्ण कालक्रम भविष्योत्तर पुराण या कलियुग राज वृत्तान्त में है।

बार्हद्रथ वंश-(१) सोमापि (मार्जारि) ३१३८-३०८० ई.पू., (२) श्रुतश्रवा ३०८०-३०१६, (३) अप्रतीप ३०१६-२९८०, (४) निरमित्र २९८०-२९४०, (५) सुकृत २९४०-२८८२, (६) बृहत्कर्मन् २८८२-२८५९, (७), (७) सेनजित २८५९-२८०९, (८) श्रुतञ्जय २८०९-२७६९, (९) महाबल २७६९-२७३४, (१०) शुचि २७३४-२६७६, (११) क्षेम २६७६-२६४८, (१२) अणुव्रत (अनुव्रत-पार्श्वनाथ काल, सम्भवतः उनका शिष्य) २६४८-२५८४, (१३) धर्म नेत्र२५८४-२५४९, (१४) निर्वृत्ति २५४९-२४९१, (१५) सुव्रत २४९१-२४५३, (१६) दृढसेन २४५३-२३९५, (१७) सुमति २३९५-२३६२, (१८) सुचल २३६२-२३४०, (१९)

सुनेत्र २३४०-२३००, (२०) सत्यजित २३००-२२१७, (२१) वीरजित २२१७-२१८२, (२२) रिपुञ्जय (२१८२-२१३२)-२२ राजा कुल १००६ वर्ष।

प्रद्योत वंश-अन्तिम राजा रिपुञ्जय को मार कर उसके मन्त्री शुनक या पुलक उसकी पुत्री से अपने पुत्र प्रद्योत का विवाह कर उसे राजा बनाया-

१. प्रद्योत (२१३२-२१०९ ई.पू.), २. पालक (२१०९-२०८५), ३. विशाखयूप (२०८५-२०३५), ४. जनक (२०३५-२०१४), ५. नन्दिवर्धन (२०१४-१९९४)-१३८वर्ष।५राजा= १३८वर्ष।

नन्दिवर्धनस्तत्पुत्रः पञ्चप्रद्योतना इमे। अष्टत्रिंशोत्तर शतं भोक्ष्यन्ति पृथिवीं नृपाः॥ (स्कन्द पुराण, १२/२)

शिशुनाग वंश-शैशुनागा दशैवैते भोक्ष्यन्ति पृथिवींनृपाः। शतानि त्रीणि वर्षाणि षष्टि वर्षाधिकानि च॥

(कलियुग राज वृत्तान्त, २/२, भागवत पुराण, १२/२/८आदि)

१. शिशुनाग (१९९४-१९५४), २. काकवर्ण या शकवर्ण (१९५४-१९१८), ३. क्षेमधन्वा (१९१८-१८९२), ४. क्षत्रौज (१८९२-१८५२), ५. विधिसार (बिम्बिसार) या श्रेणिक (१८५२-१८१४), ६. अजातशत्रु (१८१४-१७८७), ७. दर्शक (१७८७-१७५२), ८. उदायि (१७५२-१७१९), ९. नन्दिवर्धन (१७१९-१६७७), १०. महानन्दि (१६७७-१६३४)। इस काल में मायामोह स्वरूप शुद्धोदन पुत्र बुद्ध हुये-

माया मोह स्वरूपो ऽसौ शुद्धोदन सुतो ऽभवत्। मोहयामास दैत्यांस्तांस्त्याजितान्वेदधर्मकान्।

ये च बौद्धा बभूवुर्हितेभ्यो ऽन्ये वेद वर्जिताः॥ (विष्णु पुराण, ४/२३)।

उदायि ने अपने शासन के चतुर्थ वर्ष (१७४९ ई.पू.) में गंगा के दक्षिण तट पर पाटलिपुत्र नगर बसाया-

उदायि भविता यस्मात्त्रयस्त्रिंशत्समानृपः। स वै पुरवरं राजा पृथिव्यां कुसुमाह्वयं॥

गंगायां दक्षिणे कूले चतुर्थेऽब्दे करिष्यति। (वायु पुराण, ११९/३१८)

अजातशत्रु राज्य के ८वें वर्ष में बुद्ध का निर्वाण (देहान्त) हुआ (१८०६ ई.पू.)।

बुद्ध (१८८६-१८०६ ई.पू.) बिम्बिसार से ५ वर्ष छोटे थे।

८. नन्द वंश के बाद-

(१) नन्द वंश- इसके प्रथम राजा महापद्मनन्द ने चन्द्र तथा सूर्यवंशी राज्यों को समाप्त कर प्रायः पूरे भारत पर अधिकार किया। उनको द्वितीय परशुराम कहा गया है तथा सभी पुराणों में यह मुख्य परिवर्तन काल कहा गया है। परीक्षित जन्म (३१३८ ईपू) से नन्द अभिषेक का समय प्रायः १५०० वर्ष (कलियुग राजवृत्तान्त के अनुसार १५०४ वर्ष) कहा गया है।

यावत् परीक्षितो जन्म यावत् नन्दाभिषेचनम्। एतद्वर्ष सहस्रं तु ज्ञेयं पञ्चशतोत्तरम्। (विष्णु पुराण, ४/२४/१०४)

स एकच्छत्रां पृथ्वीमनुल्लंघित शासनः। शासिष्यति महापद्मो द्वितीय इव भार्गवः॥ (भागवत पुराण, १२/१/१०)

उसने ८८ वर्ष तथा उसके ८ पुत्रों ने १२ वर्ष शासन किया-

अष्टाशीति स वर्षाणि पृथिव्यां तु भविष्यति॥ (मत्स्य पुराण, २७०/२०)

सुमाल्यादि सुताह्यष्टौ समा द्वादश ते नृपाः। कौटिल्यश्चन्द्रगुप्तं स ततो राज्येभिषेच्यति।

भुक्त्वा महीं वर्ष शतं ततो मौर्यान् गमिष्यति॥ (मत्स्य पुराण, २७३/२३)

(२) मौर्य वंश- १२ मौर्य राजाओं ने३१६ वर्ष राज्य किया-

द्वादशैते नृपाः मौर्याः चन्द्रगुप्तादयो महीम्। शतानि त्रीणि भोक्ष्यन्ति दशषट्च समा कलौ॥ (कलियुग राज वृत्तान्त, ३/२)

इत्येते दश च द्वे च ते भोक्ष्यन्ति वसुन्धराम्।

शतानि त्रीणि पूर्णानि तेभ्यः शुङ्गान् गमिष्यति॥ (मत्स्य पुराण, २७०/३, वायु)

मौर्य वंश-पाण्डव राजा जनमेजय के वंशज त्रिकलिंगाधिपति थे। उनके अधीनस्थ कोसल राज्य के अधिपति मुरा या मुरसीमपत्तन से शासन करते थे। मुरा अधिपति होने के कारण उनको मौर्य कहते थे जिनके ५० से अधिक दान पत्र प्रकाशित हैं। १२ मौर्य राजाओं ने ३१६ वर्ष शासन किया-१. चन्द्रगुप्त (१५३४-१५०० ई.पू.), २. बिन्दुसार (१५००-१४७२), ३. अशोक (१४७२-१४३६), ४. सुपार्श्व (सुयश, कुणाल १४३६-१४२८), ५. दशरथ (बन्धुपालित १४२८-१४२०), ६. इन्द्रपालित (१४२०-१३५०), ७. हर्षवर्द्धन (१३५०-१३४२), ८. संगत (१३४२-१३३३), ९. शालिशूक (१३३३-१३२०), १०. सोम (देव) शर्मा (१३२०-१३१३), ११. शतधन्वा (१३१३-१३०५), १२. बृहद्रथ (बृहदाश्व) १३०५-१२१८)।

अशोक के समकालीन कश्मीर राजा गोनन्द वंशी अशोक (१४४४-१४०० ईपू) ने बौद्ध धर्म स्वीकार किया था जिसके कारण वहां के बौद्धों ने मध्य एशिया के बौद्धों को आक्रमन के लिए बुला कर कश्मीर को नष्ट भ्रष्ट कर दिरा (राजतरंगिणी, १/१०१-११७)। यह कहानी मौर्य अशोक के साथ मद्रास अभिलेखागार के अध्यक्ष हुल्ज ने जोड़ दी। मौर्य अशोक कभी हिंसा त्याग करने के लिए बौद्ध नहीं हुआ था। बौद्ध ग्रन्थ दिव्यावदान के अशोकावदान अध्याय के अनुसार कलिंग विजय के बाद बौद्ध लोगों की चुगली सुन कर उसने १२,००० जैन साधुओं की हत्या कर दी थी जिसका अहिंसा रूप में प्रचार किया जाता है। मगध राज्य कभी नष्ट नहीं हुआ था, बल्कि शुङ्ग वंश से गुप्त वंश तक अशोक के बाद ११०० वर्षों तक चलता रहा जो विश्व इतिहास में सबसे अधिक काल की शासन व्यवस्था है।

(३) शुंग वंश-१० शुंग राजाओं द्वारा ३००वर्ष शासन-

दशैते शुंग राजानो भोक्ष्यन्तीमां वसुन्धराम्। शतं पूर्ण शते द्वे च तेभ्यः कण्वान् गमिष्यति॥ (कलियुग राज वृत्तान्त, मत्स्य, वायु) १. पुष्यमित्र (१२१८-११५८ई.पू.), २. अग्निमित्र (११५८-११०८), ३. वसुमित्र (११०८-१०७२), ४. सुज्येष्ठ (१०७२-१०५५), ५. भद्रक (१०५५-१०२५), ६. पुलिन्दक (१०२५-९९२), ७. घोषवसु (९९२-९८९), ८. वज्रमित्र (९८९-९६०), ९. भागवत (९६०-९२८), १०. देवभूति (९२८-९१८).

(४) कण्व वंश-४ कण्व राजाओं ने ८५ वर्ष शासन किया-

एते चत्वारिंशत् काण्वायनश्चत्वारः। पञ्च चत्वारिंशद् वर्षाणि भूपतयो भविष्यन्ति। (विष्णु पुराण, ४/२४/३९-४२) १. वासुदेव (९१८-८७९), २. भूमिमित्र (८७९-८५५), ३. नारायण (८५५-८४३), ४. सुशर्मा (८४३-८३३)।

(५) आन्ध्र वंश-३२ राजाओं ने ५०६ वर्ष शासन किया-१. शिमुक (सिन्धुक, सुमुख, ८३३-८१०ई.पू.), २. श्रीकृष्ण शातकर्णि (८१०-७९२), ३. श्रीमल्ल शातकर्णि (७९२-७८२), ४. पूर्णोत्सङ्ग (७८२-७६४ ईपू)-यह कलिंग राजा खारावेल का समकालीन माना जाता है। वस्तुतः खारावेल का उदय आन्ध्र वंश के साथ ही हुआ जब भारत में केन्द्रीय शासन दुर्बल हो गया तथा पश्चिम में असीरिया का उदय हुआ। खारावेल के शिलालेख के अनुसार उसके राज्य के ४ वर्ष पूर्ण होने पर नन्द अभिषेक के ८०३ वर्ष बीते थे, अर्थात् उसका शासन १६३४- (८०३-४) = ८३५ ई.पू. में आरम्भ हुआ। उसके शासन के ११ वर्ष पूर्ण होने पर मथुरा में शक राजा को पराजित किया (८२४ ई.पू.)। ५. श्री शातकर्णि (७६४-७०८ ईपू), ६. स्कन्ध स्तम्बिन् (श्रीस्वामी, ७०८-६९० ईपू), ७. लम्बोदर (६९०-६७२ ईपू), ८. आपिलक (६७२-६६० ईपू), ९. मेघस्वाति (६६०-६४२ ईपू), १०. शातस्वाति (६४२-६२४ ईपू), ११. स्कन्दस्वाति (६२४-६१७ ईपू), १२. मृगेन्द्र स्वातिकर्ण (६१७-६१४ ईपू), १३. कुन्तल (६१४-६०६ ईपू), १४. सौम्य (६०६-५९४ ईपू), १५. शतस्वातिकर्ण (५९४-५९३ ईपू), १६. पुलोमावि (५९३-५५७ ईपू), १७. मेघ (५५७-५१९ ईपू), १८. अरिष्ट (५१९-४९४ ईपू), १९. हाल (४९४-४८९ ईपू)-गाथा सप्तशती का लेखक, आदि शंकर का समकालीन।२०. मण्डलक (४८९-४८४), २१. पुरन्दरसेन (४८४-४६३)-इसके काल में ३१७६ ई.पू. से आरम्भ २७०० वर्ष का सप्तर्षि चक्र पूर्ण हुआ-

तावत् कालानन्तरं भाव्यमान्ध्रान्तादापरीक्षितः। भविष्येते प्रसंख्याताः पुराणज्ञैः श्रुतर्षिभिः॥४०॥

सप्तर्षयस्तदा प्राहुः प्रदीप्तेनाग्निना समाः। सप्तविंशति भाव्यानामान्ध्राणान् तु यथा पुनः॥४१॥ (मत्स्य पुराण, २७०)

२२. सुन्दरशातकर्णि (४६३-४६२), २३. चक्रवासिष्ठीपुत्र तथा महेन्द्र (४६२-४६१), २४. शिव (४६१-४३३), २५. गौतमीपुत्र शातकर्णि (४३३-४०८), २६. पुलोमावि-२ (४०८-३७६), २७. शिव (३७६-३६९), २८. शिवकोण्डा (३६९-३६२), २९. यज्ञश्री (३६२-३४३), ३०. विजयश्री (३४३-३३७), ३१. चन्द्रश्री (३३७-३३४), पुलोमावि-३ (बालक ३३४-३२७)।

(६) गुप्त वंश-आन्ध्र राजाओं विजयश्री (३०) और चन्द्रश्री शातकर्णि (३१) के सेनापति घटोत्कच और उसके पुत्र चन्द्रगुप्त थे। चन्द्रश्री की पत्नी की सहायता से चन्द्रगुप्त ने उसकी हत्या कर उसके बालक पुत्र पुलोमावि को राजा बनाया तथा ७ वर्ष बाद उसकी भी हत्या कर स्वयं राजा बना। (कलियुग राजवृत्तान्त)-

चन्द्रश्रियं घातयित्वा मिषेणैव हि केनचित्। तत्पुत्रं प्रतिभूत्वा च राज्यं चैव नियोजितः॥

वर्षैस्तु सप्तभिः प्राप्त राज्यो वीराग्रणीरसौ। तत्पुत्रं च पुलोमनं विनिहत्य नृपार्भकम्॥

आन्ध्र राजा के सेनापति होने के कारण गुप्तों को आन्ध्रभृत्य भी कहा गया है-

आन्ध्राणां संस्थिता राज्ये तेषां भृत्यान्वये नृपाः। सप्तैवान्ध्रा भविष्यन्ति दशाभीरास्तथा नृपाः॥ (मत्स्य पुराण २७३/१७)।

मेगास्थनीज तथा एरियन के अनुसार-बड़ा प्लिनी (गाइयस प्लिनस सेकंडस ने नैचुरल हिस्ट्री के भारतीय इतिहास अध्याय में-भारत एकमात्र देश है जहां के निवासी बाहर से नहीं आये हैं। यवन राजा बाकस पिता के समय से अलेक्जेण्डर काल तक भारतीय १५४ राजा गिनते हैं, जिनका काल ६४५१ वर्ष ३ मास है। सोलिन ने भी पिता बाकस के भारत आक्रमण से अलेक्जेण्डर तक ६४५१ वर्ष ३ मास गिने हैं जिनमें १५३ भारतीय राजा गिने हैं। प्लिनी के १०० वर्ष बाद एरियन लिखता है-डायोनिसस (बाकस) से सैण्ड्रोकोट्टस (अलेक्जेण्डर आक्रमण के समय भारतीय राजा) तक १५३ भारतीय राजा६०४२ वर्ष तक थे। पर इस काल में ३ गणतन्त्र थे-प्रथम का काल नहीं लिखा, बाकी ३०० तथा १२० वर्ष के थे। यहां ३०० वर्ष मालव गण का काल है जो शूद्रक शक (७५६ ई.पू.) से श्रीहर्ष शक (४५६ ई.पू.) तक था तथा १२० वर्ष परशुराम काल होगा। उसके बाकस के पूर्व से हैहय-तालजंघ आदि का काल रहा होगा जिन्होंने बाकस की मदद की थी। कलियुग के बाद यदि मगध राजाओं को गिने तो वे २२ बार्हद्रथ + ५ प्रद्योत + १० शिशुनाग + नन्द २ पीढ़ी (९ राजा) + मौर्य १२ + शुंग १० + काण्व ४ + आन्ध्र ३२ = ८७ राजा हैं। सगर से राम तक ३१ राजा थे। राम के बाद महाभारत तक के राजाओं का नाम स्पष्ट नहीं पर अधिकांश पुराण ३५ पीढ़ी गिनते हैं। कुल योग =३१+३५+८७ = १५३ राजा। १५४ वां गुप्त काल का प्रथम राजा चन्द्रगुप्त था। उसके पिता घटोत्कच के नाम का अनुवाद ग्रीक में नाई (घट = सिर, कच बाल, उत्कच =बाल काटना, गंजा) कर दिया है। आन्ध्र राजा चन्द्रबीज (चन्द्रश्री) को अग्रमस या जैण्ड्रमस, चन्द्रगुप्त-१ को सैण्ड्रोकोट्टस, समुद्रगुप्त को सैण्ड्रोक्रिप्टस, चन्द्रगुप्त-२ को अमित्रोच्छेदस (शत्रु संहारक) कहा है। गुप्त वैश्यों की उपाधि है, इन्होंने राजा बनने पर आदित्य उपाधि धारण की-

वञ्चकं पितरं हत्वा सहपुत्रं सबान्धवम्। अशोकादित्यनामानं प्रख्यातो तु महीतले॥ (कलियुग राज वृत्तान्त)

चन्द्रगुप्त-१-विजयादित्य। समुद्रगुप्त-अशोकादित्य। चन्द्रगुप्त-२-विक्रमादित्य (यह केवल उपाधि थी)

श्रीगुप्त-घटोत्कच-चन्द्रगुप्त-१ (३२७-३२० ई.पू.)

कच (३२०) समुद्रगुप्त (अशोकादित्य) ३२०-२६९ ई.पू.

रामगुप्त (२६९) चन्द्रगुप्त-२ (विक्रमादित्य) २६९-२३३ ई.पू.

कुमारगुप्त-१ (२३३-१९१ ई.पू.)

स्कन्दगुप्त (१९१-१७५)-निःसन्तान पुरगुप्त (बुधगुप्त का अभिभावक)

वैन्यगुप्त (१७५-१७४) कुमारगुप्त-२ (१७४-१७२) बुधगुप्त (१७२-१६६)

नरसिंहगुप्त (बालादित्य-१) १६६-१२६

कुमारगुप्त-३(१२६-८५ ई.पू.) विष्णुगुप्त (८५-८२ ई.पू.)

इसके बाद उज्जैन के परमार राजा विक्रमादित्य का शासन आरम्भ हुआ।

९. ज्ञान केन्द्र-

(१) कौशिकी नदी-इसका वर्तमान प्रचलित नाम कोशी है, जो मिथिला की पूर्व सीमा थी। यहां ब्रह्मा के मानस पुत्र विश्वामित्र का ज्ञान केन्द्र था। बाद के विश्वामित्र हरिश्चन्द्र के समकालीन काशी में थे, कुशिक पौत्र गाधि पुत्र कान्यकुब्ज में थे जो बाद में द्रुपद तथा द्रोण के अधीन था। ज्ञान केन्द्र रूप में कौशिकी नदी को सरस्वती का पूर्व भाग या पार्वती के शरीर कोष के भीतर की गौरी वाक् कहा है।

विश्वामित्रस्तु पूर्वस्यां दिशि वासं अकल्पयत् (बृहद् विष्णु पुराण, मिथिला माहात्म्य)

विश्वामित्राश्रमे प्राच्यां ऋग्वेद ध्वनि नादिते (यामल सारोद्धार, मिथिला खण्ड)

कुशिकस्याश्रमं गच्छेत् सर्वपाप प्रमोचनम् (महाभारत, वन पर्व, ८४/१३१)

वामन पुराण (४०/१०-३०) में ज्ञान रूपिणी सरस्वती का ब्रह्म ह्रद (ब्रह्मपुत्र क्षेत्र) से निर्गत अरुणा सरस्वती का वर्णन है जो कौशिकी नदी हुई।

चण्डी पाठ, अध्याय ५ में कहा है कि शरीर कोष रूपी देवी गौरी हैं, उससे अलग देवी कालिका (कृष्णा) हैं। अर्थात् मस्तिष्क गुहा (शरीर कोष) की वाणी गौरी हैं।

शरीरकोशाद्यत्तस्याः पार्वत्या निःसृताम्बिका। कौशिकीति समस्तेषु ततो लोकेषु गीयते॥८७॥

तस्यां विनिर्गतायां तु कृष्णाभूत्सापि पार्वती। कालिकेति समाख्याता हिमाचलकृताश्रया॥८८॥

(२) याज्ञवल्क्य-याज्ञवल्क्य द्वारा आदित्य सम्प्रदाय के वेद का उद्धार हुआ। स्वायम्भुव मनु (२९१०० ईपू) द्वारा संकलित वेद ब्रह्म सम्प्रदाय कहा जाता है। वैवस्वत मनु के समय (१३९०० ईपू) इसका प्रचलन आदित्य (विवस्वान्) सम्प्रदाय रूप में हुआ। ११००० ईपू के जल प्रलय के बाद आदित्य सम्प्रदाय का पुनरुद्धार याज्ञवल्क्य द्वारा सूर्य आराधना द्वारा हुआ (ब्रह्माण्ड पुराण अध्याय, १/२/३५, भागवत पुराण अध्याय १२/६, वायु पुराण, ६१/१७)। इसी प्रकार मय असुर द्वारा सूर्य उपासना द्वारा सूर्य सिद्धान्त के उद्धार का उल्लेख है (सूर्य सिद्धान्त, १/२,९)। स्कन्द पुराण, अध्याय (६/१२९) में शालग्राम क्षेत्र के निकट याज्ञवल्क्य आश्रम कहा है। याज्ञवल्क्य द्वारा मिथिला में शास्त्रार्थ का कई स्थानों पर उल्लेख है (ब्रह्म पुराण, २/१७/४, ब्रह्माण्ड पुराण, १/२/३४, बृहदारण्यक उपनिषद्, अध्याय ४)। सम्पूर्ण शतपथ ब्राह्मण याज्ञवल्क्य द्वारा रचित है।

(३) कुसुमपुर- यह महाभारत काल में मुख्य शिक्षा केन्द्र था। यहां के सञ्चित ज्ञान का संग्रह आर्यभट ने कलि वर्ष ३६० (२७४२ ईपू) में किया। अभी इस नाम का पारसी अनुवाद फुलवारीशरीफ हो गया है, जो पटना का पश्चिम भाग है। इसके पश्चिम खगोल नगर है, जो खगोल विद्या का केन्द्र था।

षष्ट्यब्दानां षड्भिर्यदा व्यतीतास्त्रयश्च युगपादाः। त्र्यधिका विंशतिरब्दास्तदेह मम जन्मनोऽतीताः॥१०॥

(आर्यभटीय, कालक्रिया पाद)

आर्यभटस्त्विह निगदति, कुसुमपुरेऽभ्यर्चितं ज्ञानम् (आर्यभटीय, १/१)

१९०९ ई में जार्ज थीबो तथा सुधाकर द्विवेदी ने आर्यभट काल ३६० कलि से ३६०० कलि वर्ष (४९९ ई) कर दिया, जब पटना में कोई शासन केन्द्र नहीं था, जहां केरल से आर्यभट आते। आर्यभट की सभी गणनायें महाभारत काल की हैं, जिसका स्पष्ट उल्लेख महासिद्धान्त (२/१-२) में है। शिक्षा संस्थान को प्रायः पुष्प वाटिका कहते थे, जहां शिष्य रूपी पुष्प खिलते थे। कुसुमपुर, पुष्पपुर आदि का फ्रेञ्च अनुवाद किण्डरगार्टेन (फुलवारी) है।

(४) नालन्दा- नालन्दा के विषय में कई मिथ्या प्रचार अंग्रेजों और उनके भक्तों ने किये हैं। (१) भारत का हर ज्ञान बुद्ध से आरम्भ हुआ, वह बुद्ध २८ बुद्धों में कौन थे, इसका पता नहीं है। (२) महाभारत के बाद भारत के महानतम राजा विक्रमादित्य का नाम मिटाना था जिनका संवत् अभी तक चल रहा है। अतः गुप्त काल में एक राजा को विक्रमादित्य बना कर उसे स्वर्ण युग घोषित कर दिया। (३) मौर्य अशोक या गुप्त राजा बौद्ध नहीं थे, पर गुप्त राजा कुमारपाल द्वारा नालन्दा बौद्ध महाविहार का निर्माण घोषित कर दिया। (४) गुप्त काल में सिकन्दर का

आक्रमण हुआ, उसके बाद समुद्रगुप्त ने सेल्यूकस को पराजित किया जिसका उल्लेख प्रयाग स्तम्भ लेख तथा देवी चन्द्रगुप्तम् नाटक में है। उस काल में १३०० वर्ष पूर्व मौर्य शासन को कर भारत का इतिहास और कालक्रम पूरी तरह नष्ट किया। (५) अंग्रेजों द्वारा इतिहास और वैदिक परम्परा नष्ट करने की सदा घोषणा होती है, पर उनके भक्त केवल उसी को सत्य मानते हैं।

बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार सिद्धार्थ बुद्ध (१८८७-१८०७ ईपू) के शिष्य सारिपुत्त नालन्दा विहार आये थे। इसी से स्पष्ट है कि यह उनके बहुत पूर्व से था। मगध की प्राचीन राजधानी राजगृह या गिरिव्रज महाभारत कालीन जरासन्ध से बहुत पूर्व की थी। उसी समय का यह विश्वविद्यालय था। पश्चिम में तक्षशिला विश्वविद्यालय भी दुर्योधन (३१७५-३१३९ ईपू) द्वारा बनाया गया था (प्राचीन संस्कृत ग्नथ का पारसी अनुवाद मुजमा-ए-तवारीख)। भगवान् श्रीकृष्ण जब भीम-अर्जुन के साथ जरासन्ध की राजधानी गिरिव्रज (राजगृह) गये थे तो उसके चारों तरफ इन चैत्यों तथा ऋषियों, मुनियों, सिद्धों के भवनों का वर्णन किया है।

वैहारो विपुलः शैलो वराहो वृषभस्तथा। तथा ऋषिगिरिस्तात शुभाश्चैत्यक पञ्चमाः॥२॥

एते पञ्च महाशृङ्गाः पर्वताः शीतलद्रुमाः। रक्षन्तीवाभिसंहत्य संहताङ्गा गिरिव्रजम्॥३॥

शूद्रायां गौतमो यत्र महात्मासंशितव्रतः। औशीनर्यामजनयत् काक्षीवाद्यान् सुतान् मुनिः॥५॥

गौतमः प्रणयात् तस्मात् यथासौ तत्र सद्मनि। भजते मागधं वंशं स नृपाणामनुग्रहात्॥६॥

अङ्गवङ्गादयश्चैव राजानः सुमहाबलाः। गौतमक्षयमभ्येत रमन्तेस्म पुरार्जुन॥७॥

(गौतम ऋषि का विद्या केन्द्र राजाओं द्वारा पोषित था जहां अङ्ग, वङ्ग आदि के राजा आदि भी आते थे। गौतमक्षय का अन्य नाम नालन्दा है-न अलं ददाति = केवल सीमित या क्षय नहीं देता, अनन्त ज्ञान देता है।)

अर्बुदः शक्रवापी च पन्नगौ शत्रुतापनौ। स्वस्तिकस्यालयश्चात्र मणिनागस्य चोत्तमः॥९॥

व्यापार के लिए दूर यात्रा करने वालों को नाग कहते थे। मगध में ऐसे कई नाग परिवार थे जिनके व्यापार द्वारा मगध धनी तथा शक्तिशाली था। मणिनाग का स्थान मनेर है, जिसके निकट कुसुमपुर था। बाकी स्थानों के नाम खुदागंज (शक्रवापी), सिलाव (स्वस्तिकालय) आदि हो गये हैं। नालन्दा विश्वविद्यालय को १२०६ ई में जलाने वाले के सम्मान में नगर का नाम बख्तियारपुर (सम्भवतः अर्बुद-नदी तट पर) किया गया है।

पाण्डरे विपुले चैव तथा वाराहकेऽपि च। चैत्यके च गिरिश्रेष्ठे मातङ्गे च शिलोच्चये॥

एतेषु पर्वतेन्द्रेषु सर्वसिद्ध महालयाः। यतीनामाश्रमाच्चैव मुनीनां च महात्मनाम्॥

वृषभ, विपुल, वराह, चैत्यक गिरि (नालन्दा चैत्य), मातङ्ग गिरि-ये सिद्धों मुनियों के आश्रम या गुरुकुल थे।

(५) विक्रमशिला-विक्रमशिला खुदाई स्थल से प्राप्त पुरातात्विक सामग्रियों में कांस्य मूर्तियाँ; मृदभांड; स्तंभ; मुहरें; मृण-मूर्तियाँ आदि के अतिरिक्त हजारों किस्म की प्रस्तर कला; भवन निर्माण कला; लोहा; ताँबा; सोना; चाँदी; विभिन्न पशुओं की अस्थियाँ; नवरत्न की माला; मातृदेवी; शिवयोगी के विभिन्न रूप; विष्णु; वरुण; ब्रह्मा; कृष्ण; राम; संदीपमुनि; आदिबुद्ध; तारा; बृहस्पति; पुरुरण; उर्वशी आदि की प्रतिमाएँ मिली हैं; जो हिमयुग की सभ्यता-संस्कृति से लेकर वैदिक युग; रामायण युग; महाभारत युग; सिद्धार्थ-बुद्ध तक के साक्ष्य प्रस्तुत करती हैं। विक्रमादित्य की राजधानी का ऐतिहासिक दस्तावेज 'बत्तीसी आसन' अभी भी यहाँ अवशेष के रूप में मौजूद है। विक्रमादित्य के नाम पर विश्वविद्यालय का नाम बाद में विक्रमशिला हुआ। (विक्रमशिला का इतिहास-परशुराम ठाकुर ब्रह्मवादी-२०१३)।

१०. पटना के प्राचीन नाम-

(१) मनेर मणिनाग का स्थान था जहां महाभारत काल में भगवान् श्रीकृष्ण ठहरे थे जब वे जरासन्ध की राजधानी जा रहे थे (नालन्दा प्रसंग में उल्लेख)

(२) दानापुर-दान का अर्थ है काटना (दांव हथियार)। यहां अस्त्रागार तथा सेना रहती थी।

(३) फुलवारीशरीफ-पुराना नाम कुसुमपुर जहां के ज्ञान का संग्रह आर्यभट ने किया था।

(४) खगोल-खगोल वेधशाला का स्थान।

(५) पटना-पत्तन का अपभ्रंश। यहां नदी मार्ग से समुद्री जहाज आते थे।

(६) हाजीपुर-गंगा के उत्तर तट पर प्रकाश स्तम्भ था, जिसे प्रकाशपत्तन कहते थे। (मुञ्जाल का लघुमानस ज्योतिष ग्रन्थ का आरम्भ) प्रकाशपत्तन का स्थान लल्य के शिष्यवृद्धिद तन्त्र की मल्लिकार्जुन सूरि टीका में है। मुञ्जाल तथा लल्ल दोनों पटना के विद्वान् थे।

(७) पाटलिपुत्र-पटल का अर्थ विभाग है। सरकारी कार्यालय और निवास चौकोर पटलों में बंटे हुए थे, जिस भाग को पाटलिपुत्र कहते थे।

(८) कुम्हराड़-नदी सेघिरा क्षेत्र या डेल्टा क्षेत्र को भूगोल में कुम्भ (जलपात्र) कहते थे। राड़ का अर्थ विवाद या युद्ध है। यह नौसेना का स्थान था। पूर्व भारत के राढ़ क्षत्रियों का मूल स्थान है।

(९) मारूफ़गंज-गंज का अर्थ भण्डार या गोला (जैसे बाद का गोलघर) है। मारूफ़ मूल नाम का अरबी रूप है।

(१०) बिहटा-इसका मूल नाम बृहद्-हट्टी (बड़ा बाजार) था।